"इश्क़ के मारे"

तेरे इश्क़ के मारे हैं, किधर जाएँ,
बरसात का मौसम है, फिसल जाएँ ?

यूँ गुनाह करने का हमें शौक नहीं,
एक गुनाह तेरे साथ करें और मुकर जाएँ ?

वो चलते है बड़े अदब से हुस्न बिखरते हुए,
थोड़ा हम भी साथ चलें तो निखर जाएँ।

क्यों निकलते है घर से इबादत करने ?
आइना देखें और संवर जाएँ।

इन गिरगिटों के रंग में रंगी है दुनियां,
कितना सहें, कितना बचें, बदल जाएँ ?

© www.privankdubey.com